पुकारने में भय का अनुभव होता है; उन की धारणा में 'ओंकार' अधिक उत्तम है। परन्तु वे नहीं जानते कि ओंकार श्रीकृष्ण का ही नादविग्रह है। कृष्णभावनामृत की सार्वभौम प्रभुसत्ता है; अतः जो कृष्णभावनामृत का तत्त्वज्ञ हो जाता है, वह सौभाग्यशाली है। इनके विपरीत, जो श्रीकृष्ण को नहीं जानता, वह माया के बन्धन में है। श्रीकृष्ण का ज्ञान मुक्ति है और श्रीकृष्ण अज्ञान ही बन्धन है।

पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ।
जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु।।९।।

पुण्यः=अविकृत (आद्य); **गन्धः**=सौरभ; **पृथिव्याम्**=पृथ्वी में; **च**=तथा; **तेजः**=तापमान; **च**=भी; **अस्मि**=मैं हूँ; **विभावसौ**=अग्नि में; **जीवनम्**=आयु; **सर्वभूतेषु**=सब प्राणियों में; **तपः**=द्वन्द्व सहना; **च**=तथा; **अस्मि**=मैं हूँ; **तपस्विषु**=तपस्वियों में।

अनुवाद

मैं पृथ्वी में आद्य सौरभ हूँ और मैं ही अग्नि में तेज हूँ। मैं ही सब प्राणियों में उनका जीवन और तपस्वियों में तप हूँ।।९।।

तात्पर्य

पुण्य उसे कहते हैं जिसमें विकार नहीं होता; 'पुण्य' आद्य है। पुष्प, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि जगत् की प्रत्येक वस्तु में एक विशिष्ट सौरभ रहती है। विशुद्ध आद्य सुगन्ध, जो सर्वव्यापक है, श्रीकृष्ण का रूप है। इसी प्रकार प्रत्येक पदार्थ का अपना विशिष्ट रस होता है, जिसे रासायनिक सम्मिश्रण से यथारुचि बदला जा सकता है। अतः सभी मूल पदार्थों में किसी विशिष्ट गन्ध, सुरभि और रस की प्राप्ति होती है। **विभावसौ** का अर्थ अग्नि है। अग्नि के अभाव में निर्माण, रन्धन आदि कर्म नहीं किये जा सकते। अतः अग्नि भी श्रीकृष्ण का रूप है। अग्नि का ताप श्रीकृष्ण हैं। आयुर्वेद के अनुसार, अपच का कारण उदर में मन्दाग्नि का होना है। अतएव पाचन के लिए भी अग्नि अनिवार्य है। कृष्णभावना में हम जानते हैं कि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि सब रासायनिक और भौतिक तत्त्वों के स्रोत श्रीकृष्ण हैं। मानव जीवन की अवधि भी श्रीकृष्ण द्वारा निर्धारित है। अतः गोविन्द-अनुग्रह के अनुसार मनुष्य अपने जीवनकाल को बढ़ा-घटा सकता है। इस प्रकार कृष्णभावना प्रत्येक क्षेत्र में क्रियाशील है।

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्।।१०।।

बीजम्=कारण; **माम्**=मुझे; **सर्वभूतानाम्**=सब प्राणियों का; **विद्धि**=जान; **पार्थ**=हे पृथापुत्र; **सनातनम्**=आद्य, नित्य; **बुद्धिः**=प्रज्ञा; **बुद्धिमताम्**=बुद्धिमानों की; **अस्मि**=मैं हूँ; **तेजः**=शक्ति; **तेजस्विनाम्**=शक्तिशालियों की; **अहम्**=मैं हूँ।